

पद ९८

(राग: अल्हाय्या बिलावल - ताल: झंपा)

दुःख स्थिर भोग हा नाहीं मजला। निद्रासुखें नित्य प्राणि
रमला ॥१॥ वृत्ति दुःखाकार जोंवरी, तोंवरी कुष्ठ व्रण दाहादि

स्वानुभव सांगे। देहीं व्रण असुनियां वृत्तिलय झालिया, सहज
स्वानंद सुखी शांत गमला ॥१॥ काष्ठकृत गोव्याघ्र पाहत
ज्ञानाऽज्ञानि भयभीत ज्ञानजिन सानंद क्रीडे। ईश सुर मुनिजन्म
विश्व सौख्यादेत। मज मृत्यु मी देहीं मानुनी शिणला ॥२॥ दुःख
विपरीत सुख शांति क्रोधा वैर। तेज तम वैर हा स्पष्ट भासे। हीन
बलि भयचकित रण वीर देह त्यजित। वृत्ति गुण दोष हा पूर्ण
ठसला ॥३॥ वृत्ति व्यापार सह, वृत्तिस्थिति लय जन्म। भासवी
जाणता मी चिदात्मा। वृत्तिभोगी दुःख, ती क्षणिक मी अमर।
नित्य निरपेक्ष चिन्मार्ताण्ड स्फुरला ॥४॥